18

नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?

(ललित निबंध)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• इतिहास-कथाएँ	• गद्य (निबंध) • अंत:संबद्ध विषय	• क्रिया विशेषण • अनेक शब्दों के लिए एक शब्द • तत्सम, तद्भव, देशज शब्द	• सर्जनात्मक चिंतन • हिंसा का प्रतिकार • मानवीयता, प्रेम, अहिंसा के महत्त्व को समझना • परंपरा की पहचान

सारांश

नाख़ून का बढ़ना एक सहज स्वाभाविक शारीरिक प्रक्रिया है। आदिम मनुष्य पशुओं की तरह आत्मरक्षा के लिए नाख़ूनों का प्रयोग करता था। धीरे-धीरे आत्मरक्षा में प्रयुक्त इस हथियार का स्थान कई प्रकार के अन्य हथियारों ने ले लिया, जैसे–पत्थर, हड्डी से बने हथियार, लोहे के हथियार, बंदूकें, बम एवं अनेक प्रकार के आधुनिकतम आणविक तथा नाभिकीय हथियार। इन हथियारों ने आत्मरक्षा से आक्रमण तक की यात्रा की। फलस्वरूप चारों ओर युद्ध तथा आतंक का वातावरण बन गया। मनुष्य की पशुता अधिक हावी हो गई। यद्यपि मनुष्य ने नाख़ूनों की कलात्मक सजावट कर अपने सौंदर्य-बोध का परिचय दिया, परंतु उसकी पशुता कम नहीं हुई अर्थात् नाख़ूनों का बढ़ना रुका नहीं। हो सकता है, प्राणी विज्ञानियों के अनुसार मनुष्य की पूँछ के झड़ने की तरह उसके नाख़ूनों का बढ़ना भी बंद हो जाए, परंतु अभी स्थिति यथावत् है। भारतीय विचारधारा के अनुसार मनुष्य की बढ़ती पाशविकता पर विजय पाने के लिए संयम और अनुशासन ही कारगर उपाय हैं। हमारे यहाँ स्वनिर्मित बंधनों को ही श्रेष्ठ माना गया है, इसीलिए अंग्रेज़ी का 'इनडिपेन्डेंस' शब्द 'अनधीनता' न बनकर हमारे यहाँ 'स्वाधीनता' या 'स्वतंत्रता' ही रहा। हमारी संस्कृति और इतिहास अत्यंत समृद्ध है। अत: किसी भी विचारधारा का अनुकरण करते समय हमें नए व पुराने में से उपयुक्त व उपयोगी का चयन करना होगा। मनुष्य की पशुता को नियंत्रित करने के लिए महात्मा बुद्ध ने दया व करुणा का मार्ग दिखाया, तो गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का। गांधी जी ने सफलता (बाहर) की अपेक्षा सार्थकता (भीतरी) पर बल दिया। मानव-जाति के कल्याण के लिए व्यक्तिगत सफलता का मोह छोड़कर सबके हितचिंतन की चरितार्थता में ही सार्थकता है। इसी से हम नाख़ूनों के बढ़ने पर अर्थात् मनुष्य की पाशविकता पर रोक लगा सकते हैं।

मुख्य बिंदु

- नाख़ून का बढ़ना पशुता की निशानी है और काटना मनुष्यता की।
- अस्त्र-शस्त्र के निर्माण की होड़ मनुष्य का ऐसा आचरण है, जिसके मूल में पाशविक वृत्ति है।
- अनुशासन और संयम से पशुता को दबाया जा सकता है।
- संयम रखना एवं दूसरों के दुख-सुख के प्रति संवेदनशील होना ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है।
- बुद्ध और गांधी जी ने विश्व को करुणा, प्रेम और शांति का संदेश दिया; इन्हीं के आधार पर मनुष्यता सार्थक हो सकती है।

- नए और पुराने में से मानवता के पक्ष में उपयोगी एवं लाभदायक का चयन किया जाना चाहिए।
- सफलता एवं सार्थकता में से सार्थकता अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि उससे दूसरों का भी हित होता है।
- विश्व-शांति और मानवमात्र का कल्याण मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए।

आइए समझें

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवरण होता है। ललित निबंध अन्य प्रकार के निबंधों से भिन्न होता है, इसकी शैली अनौपचारिक, आत्मीय एवं सृजनात्मक होती है।
- नाख़ून के रूप में हथियार जीवन-रक्षा के उपाय थे। धीरे-धीरे हथियारों का विकास मानवता-विरोधी हो गया।
- आज नाख़ूनों को काटना हथियारों की होड़ पर प्रतिबंध लगाने का प्रतीक है।
- नाख़ूनों का बढ़ना जन्मजात प्रवृत्ति है, पर जो कुछ अपने आप होता है, उस पर मनुष्य मानव-जाति के पक्ष में नियंत्रण करता है। नाख़ूनों को काटकर मनुष्य पशुता को दबाता है।
- भारतीय परंपरा में 'स्व' का बंधन महत्त्वपूर्ण है। यह बंधन समाज के हित में होता है। स्पष्ट है कि जो कुछ अच्छा है, वह पश्चिम की ही देन नहीं है, अपनी परंपरा की देन भी है।
- परंपरा के नाम पर पुराने से चिपटे रहना बुद्धिमानी नहीं है। न तो सारा पुराना व्यर्थ है, न ही सारा नया सार्थक है।
- समानुभूति मानव का धर्म है, इसलिए पाशविक प्रवृत्तियों को मिटाने के लिए मनुष्य निरंतर संघर्ष कर रहा है।
- सुख का अर्थ अधिक साधन, सुविधाएँ और भौतिक उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि समाज के हित में सार्थक जीवन जीना है– बुद्ध और गांधी ने हमें यही सिखाया है।
- भविष्य में अवश्य ऐसा होगा कि पशुता पर मनुष्यता की जीत होगी और चारों ओर प्रेम, शांति, सद्भाव का साम्राज्य होगा।

योग्यता बढ़ाएँ

- विज्ञान और टेक्नोलॉजी के संबंध को समझिए।
- टेक्नोलॉजी के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को जानिए।
- विश्व-स्तर पर हिंसा को रोकने के लिए किए गए प्रयासों को जानिए।
- दूसरों के सुख-दुख के प्रति संवेदनशील होने के महत्त्व की पहचान कीजिए।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द–क्रियाविशेषण;
- भेद–कालवाचक, स्थानवाचक रीतिवाचक, परिमाणवाचक
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द: दयनीय=दया करने योग्य, निर्लज्ज– जिसे लज्जा न आती हो।
- तत्सम शब्द : वृहत्तर, आत्मतोषण, सहजात वृत्ति, वर्तुलाकार आदि।
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ : लोहा लेना, कमर कसना, कीचड़ में घसीटना आदि।

पाठ का संप्रेष्य

'नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?' प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के क्रम में लेखक मनुष्य की विकास-यात्रा का उल्लेख करता है। लेखक कहना चाहता है कि इस विकास-यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव हैं। एक तरफ़ मनुष्य की पशुता तथा बर्बरता के लक्षण मिलते हैं, तो दूसरी ओर पशुता और बर्बरता से मुक्ति के प्रयास भी। द्विवेदी जी ऐसे मनुष्य का पक्ष लेते हैं, जो मानवीय मूल्यों से युक्त हो और सफलता के स्थान पर सार्थकता को महत्त्व दे। ऐसे मनुष्यों के उदाहरणस्वरूप वह बुद्ध एवं गांधी का उल्लेख करता है। ऐसे महापुरुषों से प्रेरणा लेकर हम विश्व के वातावरण बेहतर बना सकते हैं।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पाठ को अच्छी तरह से समझने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी उन शब्दों के अर्थ अच्छी

तरह समझ लें, जिनका प्रयोग लेखक ने मूल पाठ में किया है। शिक्षार्थियों ने ऐसे शब्दों का प्रयोग पहले संभवत: नहीं किया होगा, जैसे–उद्‌भावित, मारणास्त्र, अनुसंधित्सा आदि।

- तद्‌भव और तत्सम शब्दों का अंतर जानिए।
- प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़िए और समझिए कि उत्तर में आपसे क्या अपेक्षा की गई है।
- मूल पाठ के मुख्य बिंदुओं को पहचानिए।
- प्रत्येक लेखक की अपनी विशिष्ट भाषा-शैली होती है। उसे समझने के लिए शब्दों के अर्थ के अतिरिक्त विशिष्ट प्रयोग जानना आवश्यक है।

अपना मूल्यांकन करें

1. भारतीय और पश्चिमी विचारधारा में मुख्य भेद क्या है? 20-25 शब्दों में लिखिए।
2. आप अपने जीवन में गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर क्या परिवर्तन करना चाहेंगे– 25-30 शब्दों में उल्लेख कीजिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   ललित निबंध की विशेषता नहीं है–

   (क) आत्मीयता (ख) औपचारिकता

   (ग) अनौपचारिकता (घ) सहजता